पद १२७

(राग: खमाज जिल्हा - ताल: धुमाळी)

भक्त देऊळाशीं गेला। हृदयीं देव विसरला।।१।। देव चालक शरीरांतरि। भक्त देवा हाका मारी।।२।। भक्त ठेवी नैवेद्यासीं। देव अंतरि उपवासी।।३।। भक्त देवा लागी शिणे। देवा वाटे लाजिरवाणें।।४।। झाली देवा भक्ता भेटी। तुटे जीवपणाची गांठी।।५॥ ज्ञानमार्तांडाची लीला। भक्त अवघा देव झाला।।६।